❋ 6 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई, अपवित्र से पवित्र बनकर नई दुनिया में जाने की पढ़ाई एक बाप के सिवाए और कोई भी पढ़ा नहीं सकता। बाप ही सहज ज्ञान और राजयोग की पढ़ाई द्वारा पवित्र प्रवृत्ति मार्ग स्थापन करते हैं।

2] बाप कहते हैं अभी यह पुरानी दुनिया बदलनी है। अभी मैं तुमको नई दुनिया के लिए पढ़ाता हूँ, तुम्हारा टीचर हूँ। कोई भी गुरू के लिए टीचर नहीं कहेंगे। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं, जिससे ऊंच पद पाते हैं। परन्तु वह पढ़ाते हैं यहाँ के लिए। अभी तुम जानते हो हम जो पढ़ाई पढ़ते हैं वह है नई दुनिया के लिए।

3] बाप आत्माओं को पावन बनाते हैं और याद भी दिलाते हैं कि तुम देवता शरीर वाले थे। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र थे। अब फिर से बाप आकर पतित से पावन बनाने हैं, इसलिए ही तुम यहाँ आये हो।

4] बाप ने बताया है– मीठे-मीठे बच्चों, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, मैं तुमको 84 जन्मों की कहानी सुनात हूँ। तो जरूर पहले जन्म से लेकर समझाना पड़े। तुम पवित्र थे, अब विकारी बने हो तो देवताओं के आगे जाकर माथा टेकते हो।

5] अभी तुम जानते हो हम उसी देवी-देवता धर्म में ट्रांसफर हो रहे हैं। उसके लिए तुम राजयोग की पढ़ाई पढ़ रहे हो। राजाई पानी है।

6] बाप की है श्री-श्री अर्थात् श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। हम श्रेष्ठ बनते हैं। श्री-श्री के अर्थ का किसको पता नहीं है। एक शिवबाबा का ही यह टाइटिल है परन्तु वह फिर अपने को श्री-श्री कह देते हैं।

7] रंगून में एक तलाव है, कहते हैं उनमें स्नान करने से परियाँ बन जाते हैं। वास्तव में यह है ज्ञान स्नान, जिससे तुम देवता बन जाते हो। बाकी वह तो सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। यह तो कभी हो नहीं सकता कि पानी में स्नान करने से परी बन जायें। यह सब है भक्ति मार्ग।

8] जो भी आते हैं पहले शान्तिधाम में जाकर सुखधाम में आयेंगे। कई कहेंगे हम ज्ञान नहीं लें, पिछाड़ी में आयेंगे तो बाकी इतना समय मुक्तिधाम में रहेंगे। यह तो अच्छा है, बहुत समय मुक्ति में रहेंगे। यहाँ करके एक-दो जन्म पद पायेंगे। वह क्या हुआ? जैसे मच्छर निकलते हैं और मर जाते हैं। तो एक जन्म में यहाँ क्या सुख रखा है।

9] तुमको पुरूषार्थ तो जरूर करना पड़े। पुरूषार्थ बिगर थोड़ेही कुछ होना है। खांसी आपेही कैसे ठीक होगी? दवाई लेने का पुरूषार्थ करना पड़े। कोई-कोई ऐसे भी ड्रामा पर बैठ जाते हैं, जो ड्रामा में होगा। ऐसा उल्टा ज्ञान बुद्धि में नहीं बिठाना है। यह भी माया बिघ्न डालती है। बच्चे पढ़ाई को ही छोड़ देते हैं। इसको कहा जाता है– माया से हार।

❋ योग-

1] यह तो है ही बन्धन-मुक्त, बाकी रहा शरीर का बन्धन, उसमें देह सहित सबको भूलना है सिर्फ एक बाप को याद करना है। कोई भी देहधारी क्राइस्ट आदि को याद नहीं करना है।

❋ धारणा-

1] मीठे बच्चे– यहाँ तुम बदलने के लिए आये हो, तुम्हें आसुरी गुणों को बदल दैवी गुण धारण करने हैं, यह देवता बनने की पढ़ाई है।

2] बाबा ऑर्डीनेन्स निकालते हैं– बच्चे, **काम महाशत्रु है।** यह तुमो आदि-मध्य-अन्त दु:ख देते हैं। अभी तुमको गृहस्था व्यवहार में रहते हुए पावन बनना है।

❋ सेवा-

1] आप शुभचिन्तक आत्माओं के थोड़े समय का सम्पर्क भी उन आत्माओं की चिंताओं को मिटाने का आधार बन जाता है। आज विश्व को आप जैसी शुभचिंतक आत्माओं की आवश्यकता है इसलिए आप विश्व को अतिप्रिय हो।